Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(*Peer Reviewed Hindi Journal*)

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

मानवतावादी चेतना के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के महाकवि जयशंकर प्रसाद और मलयालम के महाकवि कुमारनाशान के काव्यों का शास्त्रीय अध्ययन |

डॉ.जार्ज जोसफ
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, क्राइस्ट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),बेंगलुरु-29, कर्नाटक, भारत |

सारांश: *स्वच्छन्दतावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों में मानवतावाद का प्रधान स्थान हैं | स्वच्छन्दतावाद की धार्मिक चेतना का मूलाधार यही मानवतावाद है | मानवतावाद वह विचारधारा है जिसके अनुसार मानव का प्रमाण मानव ही है | मानव की महत्ता और गुरुता में विश्वास मानवतावादी प्रवृत्ति की प्रमुख विशेषताएँ हैं | मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठा पाने केलिए स्वच्छन्दतावादी कवि निरंतर प्रयत्न करते रहे | इस कार्य में आधुनिक हिन्दी साहित्य के महाकवि जयशंकर प्रसाद और आधुनिक मलयालम साहित्य के महाकवि कुमारनाशान के कार्य काफी सराहनीय हैं | यानी जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान दोनों उनकी साहित्य सृष्टि में मानवतावादी कवि रहे |*

मूल शब्द: स्वच्छन्दतावाद, मानवतावाद, आध्यात्मिक चेतना, समन्वयवाद, मानव-कल्याण |

प्रस्तावना:

महाकवि जयशंकर प्रसाद के काव्य में मानवतावादी चेतना

जयशंकर प्रसाद की प्रारंभिक रचनाओं से लेकर अंतिम रचना 'कामायनी' तक उनकी यह मानवतावादी चेतना दर्शनीय है | 'चित्राधार' की 'मकरंदा - बिंदु ' शीर्षक कविता में प्रसाद ने मानवता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ईश्वर से शिकायत के शब्दों में कहा है कि जब यत्र-तत्र सर्वत्र आप ही विराजमान हैं तो मानव-मानव में ईर्ष्या, द्वेष और परस्पर झगड़े क्यों हैं?

"छिपी के झगड़ा क्यों फैलायो

मंदिर मस्जिद गिरिजा सब में खोजत सब भरमायो |"

'महाराणा का महत्व' शीर्षक काव्य महाराणा प्रताप के देश प्रेम एवं चरित्र को ऊँचा उठाकर दिखानेवाला श्रेष्ट काव्य है | परस्त्रियों के प्रति आदर सत्कार की भावना उनके चरित्र की शोभा बढ़ा देती है | इस कविता में कवि की मानवतावादी विचारधारा बड़े ही प्रभावशाली रूप में व्यक्त हुई है |

'झरना' में सकलित 'तुम'और 'आदेश' शीर्षक कविताएँ मानवतावादी कविताएँ हैं | इन काव्यों में कवि मानवतावाद की प्रतिष्ठा करके विश्व कल्याण की कामना करते हैं |

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

उदा: “परम प्रकाश हो, स्वयं ही पूर्ण काम हो

खेद भय रहित अभेद अभिराम हो |"

प्रसाद का मानना था कि विश्व भर के सारे लोग आनद सहित सुखमय रहें चाहे दासी हो या गुलाम कवि की दृष्टि में सब सामान है | कवि लोकमंगल की कामना इस प्रकार करते हैं -

“करुणा करुणालय जगदीश दयानिधे |

सब यों ही आनंद सहित सुख से रहें ||"

'आंसू' एक मानवतावादी रचना है जिसका आलम्बन निश्चय ही मानव है | पंडित नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में - "आंसू को अध्यात्म और छायावाद का नाम देकर उसे जटिल बना देने के पहले उसको उसके प्रकृत रूप में देखना चाहिए | विरह का इतना बड़ा मार्मिक वर्णन करनेवाले कवि के किसी वाद की छाया लेने की जरूरत नहीं -उसकी उच्चता स्वयं सिद्ध है | पर कहने से क्या लाभ कि यह वियोग अधिक मार्मिक और सत्य है? " 'आंसू' एक गीति काव्य है | इसमें मानव और मानवीय भावनावों की प्रधानता का उल्लेख किया गया है |

'कामायनी' में प्रसाद ने जो सन्देश दिया है | वह सम्पूर्ण मानवता केलिए होता है | श्रद्धा के द्वारा कवि ने मनु को जो जाग्रत सन्देश सुनाया, वह मानवता केलिए है -

“यह नीड मनोहर कृतियों का

यह विश्व कर्म -रंगस्थल है

है परंपरा लग रही यहाँ

ठहरा जिसमें जितना बल है |”

'कामायनी' में मनु को मानवता का पर्याय बनाया है | उनकी भावनाएँ व्यक्तिगत नहीं बल्कि समाज से सम्बंधित हैं | डॉ. प्रेमशंकर के शब्दों में -"प्रसाद मानवीय भावनाओं के प्रति प्रारम्भ से ही सजग रहे और उन्होंने भावना का अंकन करने में सफलता प्राप्त की | 'कामायनी' का कवि मानव -मन की व्याख्या करता हैं और अंत में उसमें आनद की प्रतिष्ठा करता है | उसमें कृतिकार का एक समन्वयवादी दृष्टिकोण रहा है और ह्रदय -बुद्धि ,नारी -पुरुष आदि को मिलना चाहता है | समरसता अथवा समन्वय से आनंद का सृजन होता है | इस आनंद को मानवता के कल्याण में नियोजित करना रचनाकार का मुख्य उद्देश्य है प्रसाद एक मानवतावादी के रूप में 'कामायनी'में आते हैं जो जीवन को सर्वांग सम्पूर्ण तथा मानवता को सुखी बनाने में प्रयत्नशील है |"

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

'कामायनी' के एक प्रसंग में श्रद्धा मनु की तलाश में जाते समय अपने पुत्र को देकर इड़ा से विश्व मानवता के प्रचार - प्रसार केलिए कहती है | क्योंकि विश्व-मानवता और समरसता के प्रचार-प्रसार से ही मानव का उदय हो सकता है -

"यह तर्कमयी तू श्रद्धामय,

तू मननशील कर कर्म अभय

इसका तू सब संताप निश्चय

हर ले हो मानव भाग्य उदय,

सबकी समरसता कर प्रचार

मेरे सुत! सुन माँ की पुकार |"

'कामायनी' में श्रद्धा मनु से प्रेम करती है | साथ ही मानवता के प्रति भी उसका अगाध प्रेम है | उसके सम्पूर्ण चरित्र में मानवता के श्रेय पक्ष का स्वरुप निहित है |

"औरों को हँसते देखो मनु

हँसो और सुख पाओ |

अपने सुख को विस्मृत कर लो,

सबको सुखी बनाओ |"

'कामायनी' के आद्यंत प्रसाद की व्यापक जीवन दृष्टि की झांकी मिलती है |वास्तव में देवताओं की संकुचित दृष्टि व्यक्ति सुख निष्ठ है | देवताओं का अशेष मनु की आत्मसुख की संकीर्णता से उलझा रहता है | एक बार श्रद्धा अहंकारनिष्ठ मनु को समझाती हुई कहती है कि आत्म सुख की सीमित दायरे में न तो विश्व का कल्याण होगा न ही व्यक्ति का विकास होगा | इस काव्य की रचना शुद्ध मानवीय धरातल पर हुई है | 'कामायनी' केअंतिम भाग में प्रसद जी कहते हैं कि इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय से ही मानवता की सिद्धि होगी, तभी मानव को अखंड आनंत की प्राप्ति होगी | इस प्रकार की दुनिया वे कल्पना करते थे और मानते थे कि जीवन का समाधान पशुवृत्तियों और देववृत्तियों पर मानवता की विजय में है | वैसे जयशंकर प्रसाद के काव्य भारतीय मानवतावाद की मुक्त धार्मिक चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति है |

महाकवि कुमारनाशान के काव्य में मानवतावादी चेतना

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

जयशंकर प्रसाद जैसे कुमारनाशान भी मानवतावादी प्रवृत्ति के कवि रहे | इस प्रवृत्ति के द्वारा कवि जन साधारण को भौतिक दृष्टि से समृद्ध बनाना चाहते हैं |

कुमारनाशान की सभी रचनाएँ मानवतावादी कही जा सकती है क्योकि जिनमें तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक पतन की ओर इशारा होता है और मानव-कल्याण की भावना भरी रहती हैं |

एक स्वच्छन्दतावादी कवि की मानवतावादी प्रवृत्तियों में अधिकांश प्रवृत्तियाँ कुमारनाशान के काव्यों में दर्शनीय हैं | जैसे - भ्रष्टाचार के विरुद्ध आक्रोश करना, सामाजिक अंध-रूढ़ियों तथा जीर्ण-विचारों से लोगों को मुक्त करके उन्हें पुनरुथान कर सन्देश देना, मूल्य-च्युति पर क्रोध दिखाना, नैतिक पतन पर चिंता व्यक्त करना, प्राणी मात्र के प्रति दया और सहानुभूति प्रकट करना इत्यादि |

इन सारी प्रवृत्तियों का आधार कवि की आध्यात्मिक चेतना है जिसमें मनुष्य, सारे प्राणी और प्रकृति सब सामान है |

कुमारनाशान के गुरुवर श्रीनारायण गुरु और उनके आराध्य गौतम बुद्ध दोनों लोकसेवा की मूर्ति थे वे इस संसार में रहते हुए निर्लिप्त भाव से मानव कल्याण का प्रयत्न करते रहे | उनका शिष्य होकर कुमारनाशान को भी मानव कल्याण केलिए जीने की प्रेरणा मिली | वे कहा करते थे कि इस संसार में रहकर वैराग्य सहित आनंद का अनुभव करने में ही मानव जीवन की धन्यता है |

डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर के शब्दों में - "अद्वैतवाद के मिथ्या-तत्व, बौद्ध धर्म के दुःख-सत्य तथा लोक सेवा की श्रेष्ठता के ज्ञान के फलस्वरूप कुमारनाशान की कविताओं में मानवतावाद का स्वर गूँज उठता है |

उदा:

"पुरिकम पुजुपोल पिडंजाकम

  जेरियुम तनताल तंगी कैकालाल

पिरिवानारुतनज्जु कण्णुनीर

    चोरियुम लक्ष्मणने स्मारिप्पु जान |"

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

(भाव:सीता अत्यधिक मानसिक पीड़ा एवं वेदना से अपने हाथों पर सिर थामकर लक्ष्मण की याद करती है जो सीता को कानन में अकेले छोड़कर विदा लेने में अपार दिखी थे |) यहाँ कवि लक्ष्मण के द्वारा मानवीय चेतना को अधिक श्रेष्ठता देने का प्रयास करते हैं |

'दुरवस्था' नामक खंड काव्य में कवि की मानवतावादी चेतना मानव मंगल की भावना से ओत प्रोत दिखाई पड़ती है -

"एन्नाल कुटिलिलुम इंटेनकिलूम ननमा

योनुन्ताम, दैवं दयालुवल्ले! "

(भाव:कवि कहते हैं कि भगवान दयालु है जो अमीर गरीब के भेद-भाव बिना सब में मंगल की कामना करते हैं |)

उपसंहार

मानवतावाद की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान के काव्यों का अध्ययन करें तो यह सत्य साबित हो जाता है कि उनके काव्यों में मानवतावादी चेतना अन्य कवियों से भी अधिक मात्रा में परिलक्षित होती है | साधारणतः मानवतावादी कवियों के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वे स्वतंत्र होते हैं तथा अनुभववादी और ऐहिकता परक भी होते हैं | जयशंकर प्रसाद और कुमारनाशान दोनों इस कोटि के कवि थे जो अपनी रचनाओं द्वारा मानवतावादी चेतना को उजागरकर दिखने की चेष्ठा करते रहे | ये दोनों कवियों ने जीवन के शाश्वत उपादानों को लेकर काव्यों की रचना की है | उनकी विचार धारा का आधार ही मानवतावादी चेतना है | उनके व्यक्तित्व की विशेषता यह थी कि वे मानव को सर्वोपरी मानते थे और मानव जीवन के अनेक पक्षों पर भी विचार किया है |

सन्दर्भ:

१. आधुनिक काव्य की स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ - डॉ. अजबसिंह

२. रोमांटिक साहित्य शास्त्र की भूमिका - देवराज उपाध्याय

३. प्रसाद के काव्य का शास्त्रीय अध्ययन - सुरेन्द्रनाथ सिंह

४. झरना - जयशंकर प्रसाद

५. प्रसाद काव्य विवेचन - डॉ. हरदेव बाहरी

६. प्रसाद का काव्य - डॉ. प्रेमशंकर

७. प्रसाद ग्रंथावली - जयशंकर प्रसाद

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 7 July 2021

८. कुमारनाशान मौलिक कृतिकल- कुमारानशान

९. आधुनिक हिन्दी काव्य तथा मलयालम काव्य - डॉ.विश्वनाथ अय्यर

१०. महाकवि कुमारनाशान - सी. ओ. केशवन

११. आशान कविता - एक अध्ययन - प्रो. जोसफ मुण्डश्शेरी